एक सप्ताहांत वेंडेल के साथ

केविन हेनकेस

अनुवाद - प्रमोद कुमार मेहता

सोफी के घर पर सप्ताहांत बिताना वेंडेल के लिए तो बहुत मज़ेदार था, लेकिन सोफी के लिए उतना मज़ेदार नहीं था। वेंडेल की बेकाबू हरकतें और मज़ाक किसी को भी पागल कर देने के लिए काफ़ी थे, जब तक कि सोफी ने एक ऐसा खेल नहीं बना दिया जिसने आखिरकार वेंडेल को अवाक कर दिया।

'हेन्केस' के चूहों के जलरंग चित्र जीवंत, भावपूर्ण और आकर्षक हैं। बच्चे मन ही मन चाह सकते हैं कि काश वे भी वेंडेल जैसे साहसी बन पाते, लेकिन जब सोफी आखिरकार अपनी बात मनवाएगी तो उन्हें भी खुशी होगी।

- *स्कूल लाइब्रेरी जर्नल*

एक सप्ताहांत वेंडेल के साथ

केविन हेनकेस

अनुवाद - प्रमोद कुमार मेहता

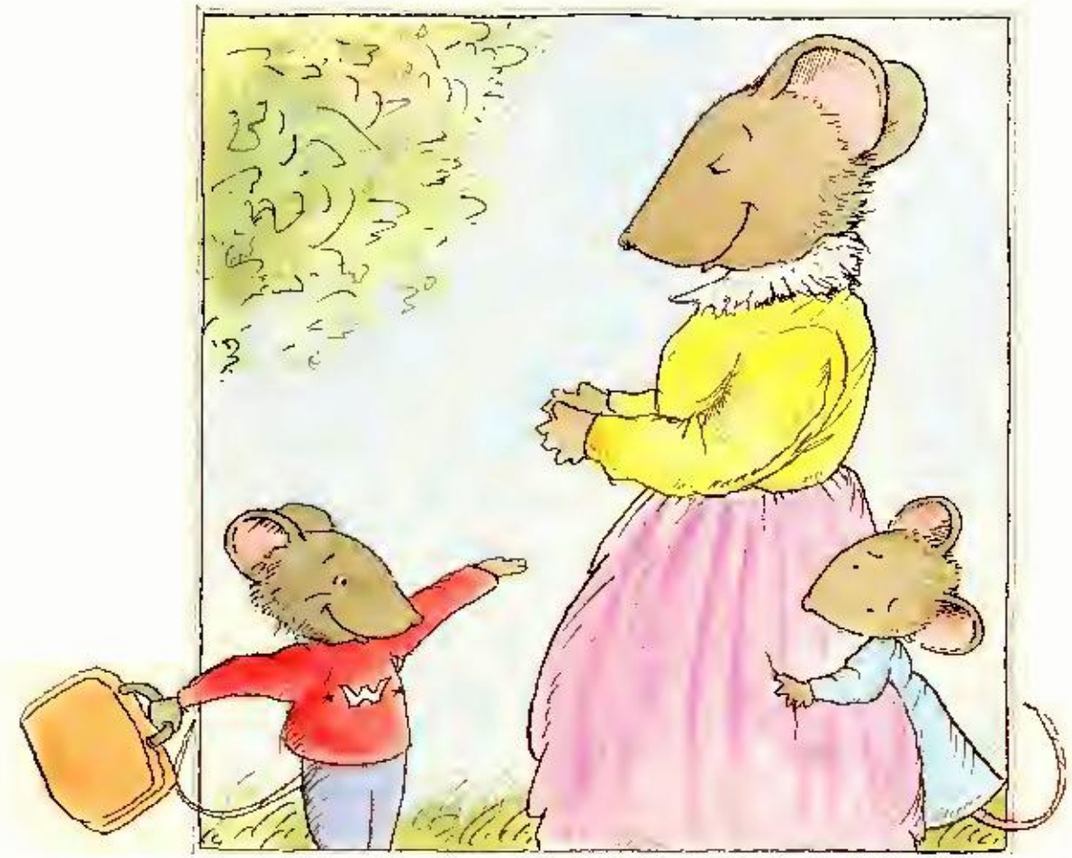

शुक्रवार दोपहर वेंडेल के माता-पिता उसे सोफी के घर छोड़ आए।
"वेंडेल सप्ताहांत हमारे साथ बिताएगा," सोफी की माँ ने कहा,
"जबकि उसके माता-पिता शहर से बाहर रिश्तेदारों से मिलने जा रहे हैं।"
"ओह बॉय!" वेंडेल ने कहा।
सोफी ने कुछ नहीं कहा।

नाश्ते के बाद, सोफी ने वेंडेल को उसका स्लीपिंग बैग और सूटकेस ऊपर ले जाने में मदद की।

"अच्छा, अब हम क्या करेंगे?" वेंडेल ने पूछा। "क्या तुम्हारे पास कोई खिलौने हैं?"

सोफी ने अपने खिलौनों के संदूक की ओर इशारा किया।

"क्या तुम्हारे पास बस इतना ही है?" वेंडेल ने कहा। "मेरे पास तो इससे भी लाख गुना ज़्यादा है। यहाँ और क्या करना है?"

"हम घर-घर खेल सकते हैं?" सोफी ने कहा।

"अगर मैं नियम बना सकूँ, तो ही अच्छा होगा," वेंडेल ने कहा।

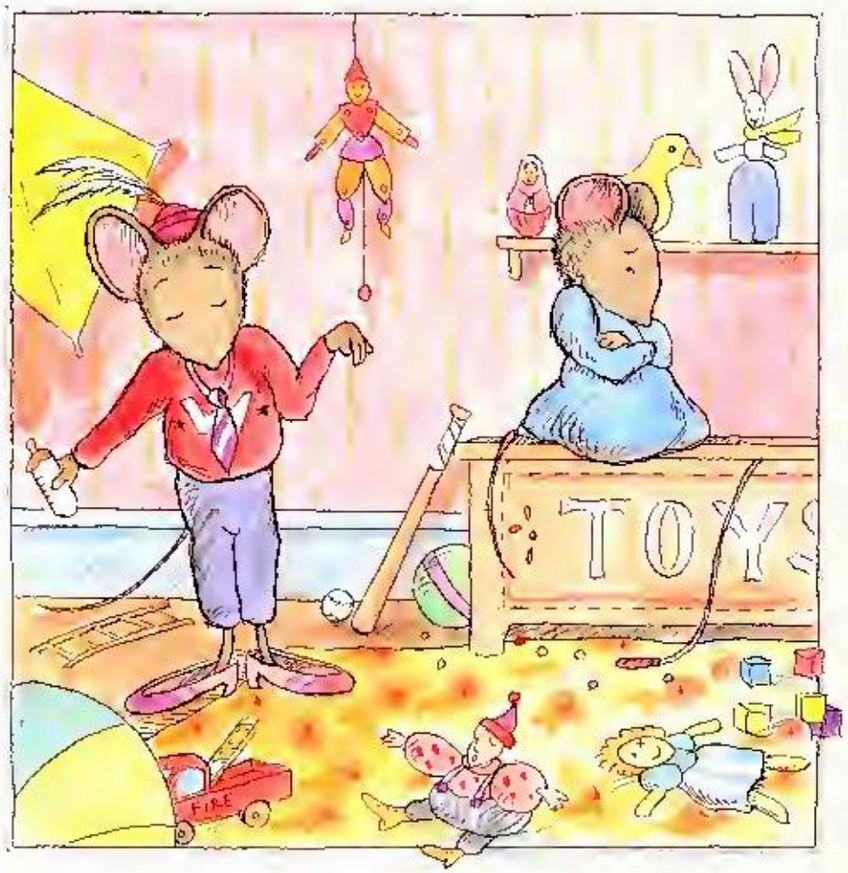

तो वे घर-घर खेलते थे और वेंडेल नियम बनाता था।
वह पिता, माता और पाँच बच्चों का पिता था।
सोफी कुतिया थी।

फिर उन्होंने अस्पताल खेला।
वेंडेल डॉक्टर, नर्स और मरीज़ था।
सोफी डेस्क क्लर्क थी।

जब उन्होंने बेकरी में काम करने का नाटक किया,
वेंडेल बेकर था और सोफी एक मीठा रोल।
"क्या यह मज़ेदार नहीं है?" वेंडेल ने कहा।
सोफी ने कुछ नहीं कहा।

रात के खाने पर वेंडेल ने कहा कि उसे हर हरी चीज़ से एलर्जी है
इसलिए उसे सब्ज़ियाँ खाने की ज़रूरत नहीं है।
और फिर, जब सोफी नहीं देख रही थी, तो उसने
उसकी मिठाई से व्हीप्ड क्रीम निकाल ली।

"वेंडेल कब जा रहा है?" सोफी ने फुसफुसाते हुए पूछा।
"जल्द ही," उसकी माँ ने कहा।
"जल्द ही," उसके पिता ने कहा।

सोफी के माता-पिता ने सोफी को उसके बिस्तर में लिटा दिया, वेंडेल को उसके स्लीपिंग बैग में ज़िप किया, दोनों को चूमा और लाइट बंद कर दी, वेंडेल ने अपनी टॉर्च उठाई और सीधे सोफी की आँखों में डाल दी।

"कल मिलते हैं!" उसने मुस्कुराते हुए कहा।

सोफी ने अपनी आँखें बंद कर लीं। "मैं वेंडेल के घर जाने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ," उसने खुद से कहा।

शनिवार की सुबह, जब सोफी उठी, तो
उसके बिस्तर पर एक नीला-सा दैत्य
उछल-कूद कर रहा था।
वह वेंडेल था।

किसी ने नाश्ते के समय
उसके पैर को नोचा।
वह वेंडेल ही था।

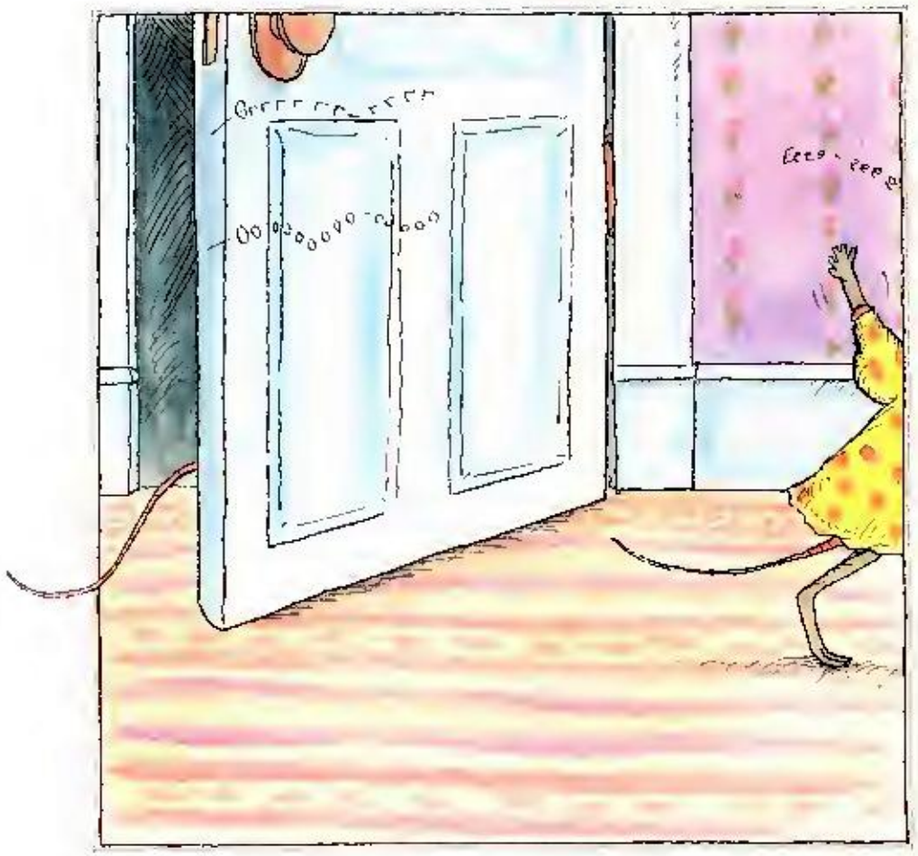

उसने झाड़ू वाली अलमारी से
डरावनी आवाज़ें सुनीं।
वह वेंडेल था।

वेंडेल ने सोफी के क्रेयॉन इस्तेमाल
किए और उन्हें बरामदे में ही छोड़
दिया ताकि वे पिघल जाएँ।

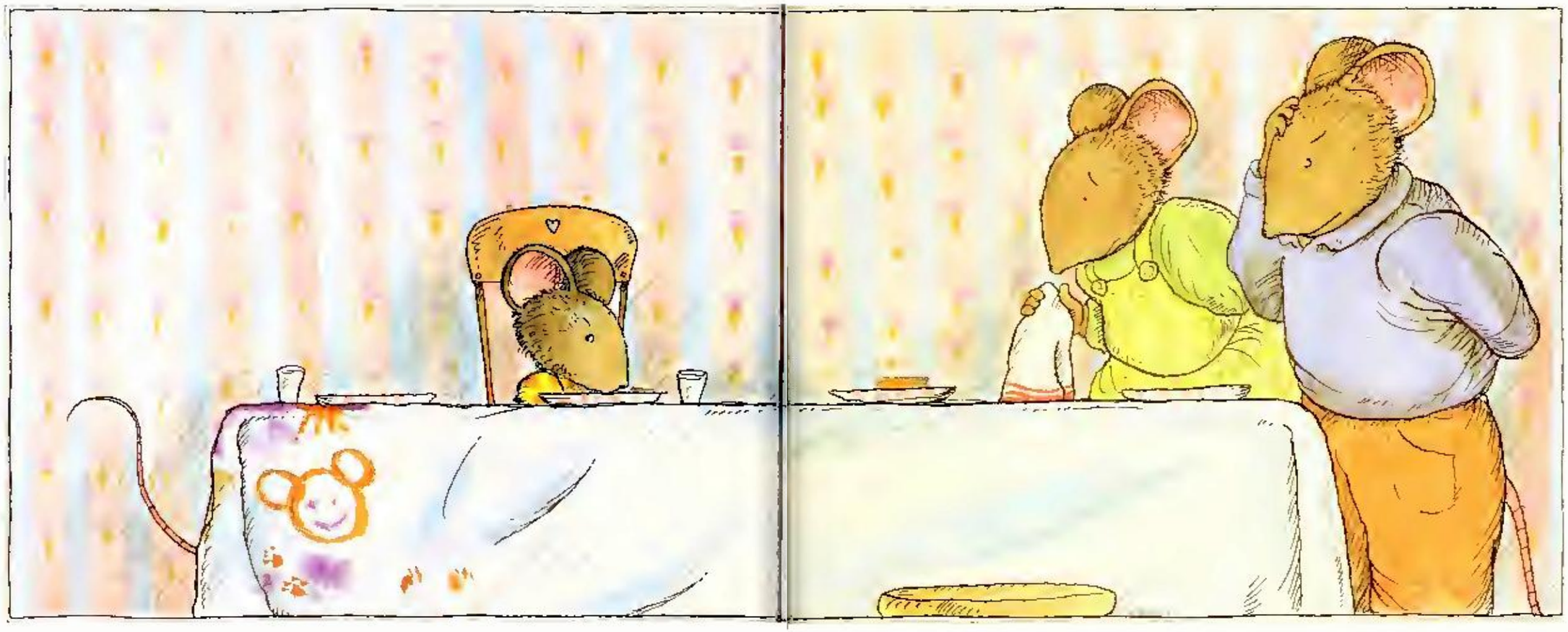

दोपहर के भोजन के समय वेंडेल ने अपनी उंगलियों से
मूंगफली के मक्खन और जेली से पेंटिंग की।
"क्या यह मज़ेदार नहीं है?" वेंडेल ने कहा।
सोफी ने कुछ भी नहीं बचाया।

"वेंडेल कब जा रहा है?" सोफी ने फुसफुसाते हुए पूछा।
"जल्द ही," उसकी माँ ने कहा।
"जल्द ही," उसके पिता ने कहा।

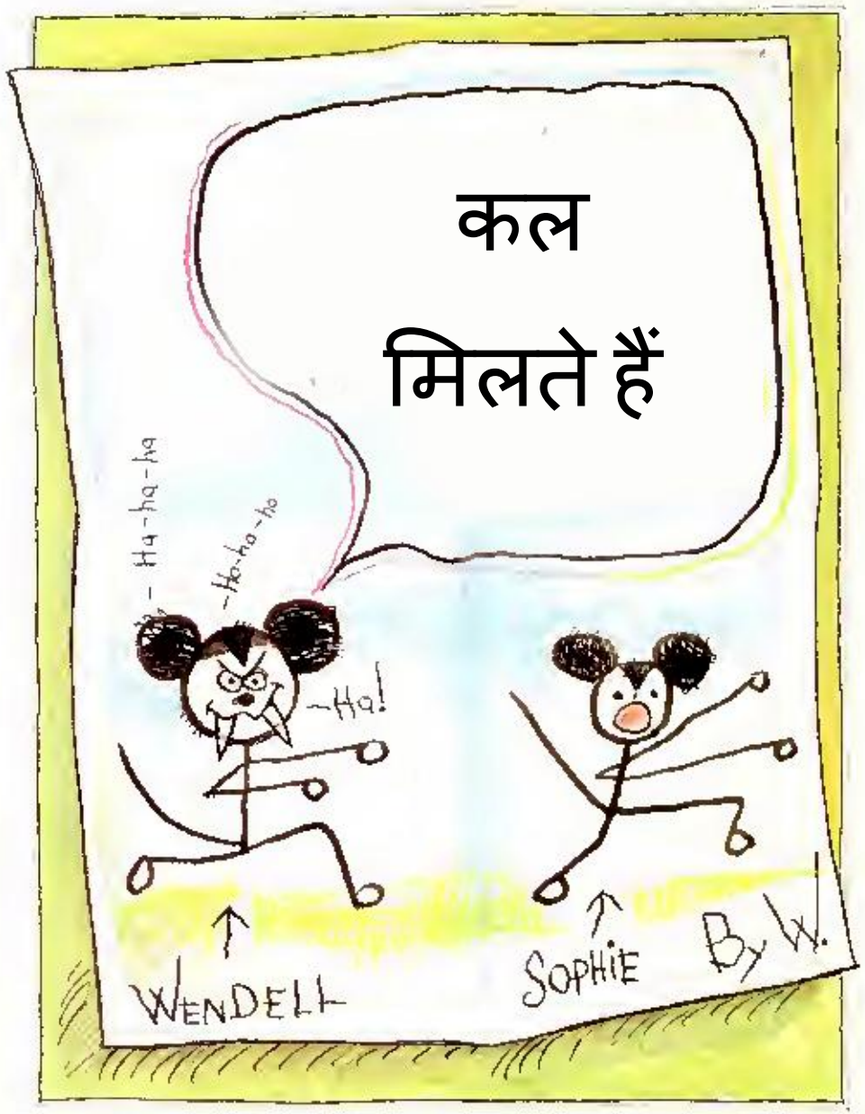

सोने के समय, जब सोफी ने अपना सिर तकिये पर रखा, तो उसे कुछ चटकने की आवाज़ सुनाई दी। यह वेंडेल का एक नोट था। इसमें लिखा था, "कल मिलते हैं:"

सोफी ने अपनी आँखें बंद कर लीं। "मैं वेंडेल के घर जाने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ," उसने खुद से कहा।

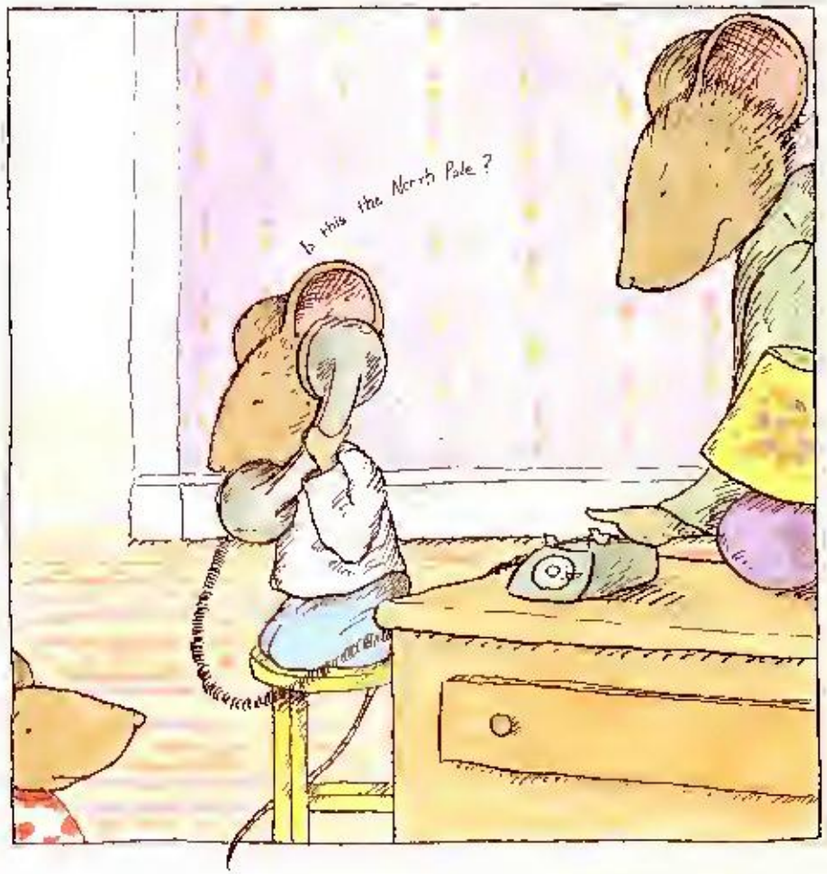

रविवार की सुबह वेंडेल के माता-पिता उसे
लेने आने से पहले उसने एक लंबी दूरी
की कॉल करने की कोशिश की।

उसने बाथरूम के शीशे पर
टूथपेस्ट से अपना नाम लिखा

और उन्होंने शेविंग क्रीम से सोफी को नया
हेयरस्टाइल दिया।

"क्या तुम बाहर जाकर मुझे इसे धोने में मदद
करना चाहोगी?"
सोफी ने पूछा। "हम फायर फाइटर खेल सकते हैं।"
"अरे यार!" वेंडेल ने कहा

तो उन्होंने फायर फाइटर का खेल खेला—और सोफी ने नियम बनाए।

वह फायर चीफ थी और वेंडेल जलती हुई इमारत थी।

"क्या यह मज़ेदार नहीं है?" सोफी ने कहा।

वेंडेल ने कुछ नहीं कहा।

"क्या मुझे अग्निशमन प्रमुख बनने का मौका मिलेगा?" वेंडेल ने पूछा।

"शायद," सोफी ने कहा।

जल्द ही वेंडेल और सोफी को इस बात की परवाह नहीं रही कि अग्निशमन प्रमुख कौन है या जलती हुई इमारत कौन है।

"जाने का समय हो गया!" सोफी की माँ ने कहा।

"जाने का समय हो गया!" सोफी के पिता ने कहा।

"पहले ही?" वेंडेल ने कहा।

"पहले ही?" सोफी ने कहा।

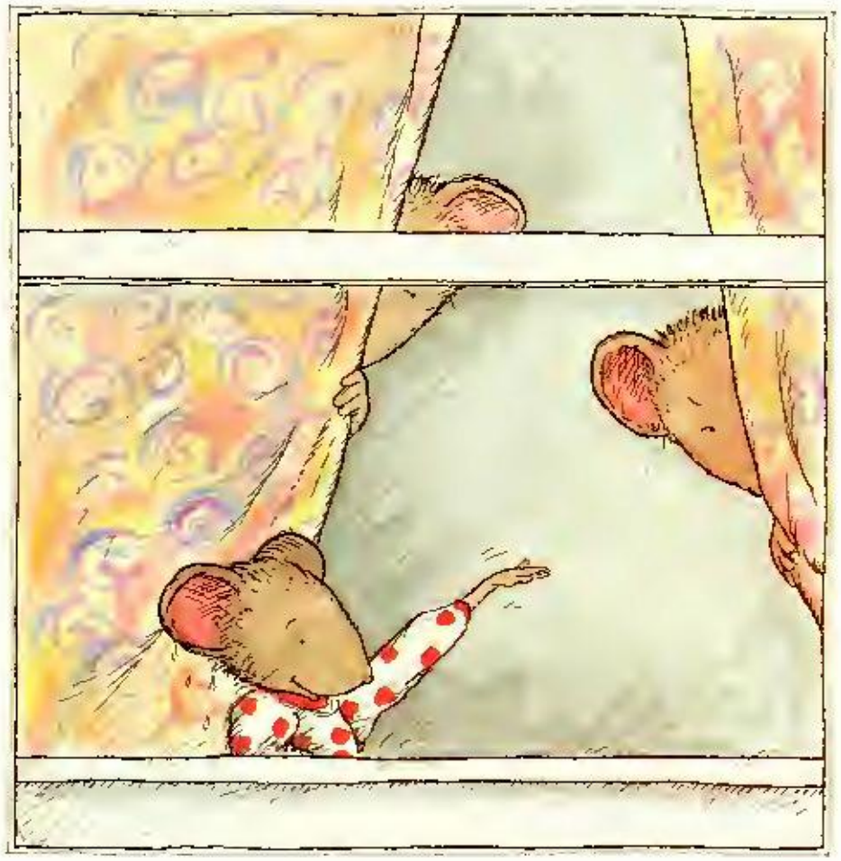

"वेंडेल कब वापस आ रहा है?" सोफी ने पूछा।

"कभी नहीं!" उसकी माँ ने कहा।

"कभी नहीं,?" उसके पिता ने कहा।

उस दोपहर, जब वेंडेल ने अपना सूटकेस खोला,
तो उसे कुछ चटकने की आवाज़ सुनाई दी। यह
सोफी का एक नोट था।
इसमें लिखा था,
"उम्मीद है मैं तुम्हें जल्द ही देखूँगा!"